# नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय

बी.ए.(प्रतिष्ठा )प्रथम खण्ड

अनिवार्य हिन्दी एवं इतर भाषाओं के लिए

## बिहारीलाल की काव्यगत विशेषताएँ

महाकवि बिहारीलाल का संबंध हिंदी साहित्य में रीतिकाल से है । इनका जन्म संवत 1595 के आसपास मध्यप्रदेश के ग्वालियर में हुआ था । बिहारी जयपुर नरेश राजा जयसिंह के दरबार में अपनी श्रृंगारिक काव्यों के माध्यम से काफी प्रसिद्धि पा चुके थे । राजा जयसिंह को आगाह के रूप में भी इन्होंने कई दोहों का निर्माण किया है । एक बार राजा जयसिंह जब अपनी नयी रानी के प्रेम में डूबकर राजकाज की ओर से विमुख हो गए तो बिहारी ने यह दोहा लिखकर राजा के पास भिजवाया -

" नहिं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास यहि काल

अली कली ही सौं विंध्यौ आगे कौन हवाल ।।"

इस दोहा का यह प्रभाव था कि राजा तुरंत अपने दरबार में लौट आए और बिहारी को इनाम स्वरूप एक अशरफ़ी भेंट की । बिहारीलाल दरबारी कवि होते हुए भी अपनी कर्तव्यनिष्ठा की और सजग थे । उपर्युक्त दोहा में उनकी जनहित भावना के साथ काव्य सौंदर्य को भी देखा जा सकता है । यहां अन्योक्ति के साथ व्यंजना का अद्भुत मिश्रण है । उनके दोहों में विविध विषयों की जानकारी समाहित है । यह जानकारी एक ओर तो उनके लोकज्ञान का परिचय देती है तो दूसरी और विविध शास्त्रों का । यह सच है कि जो कवि जितना शास्त्रज्ञ पंडित एवं प्रतिभा संपन्न होगा उसकी कविता में उतनी ही व्यापकता, विशदता एवं बहुज्ञता उपलब्ध होगी, जो कि बिहारी पर सटीक बैठता है ।

बिहारीलाल की काव्यगत विशेषताओं के कारण ही इन्हें रीतिकाल का प्रतिनिधि कवि माना जाता है । रीतिकाल में इन्हें रीतिसिद्ध परंपरा के अंतर्गत रखा गया है । इन्होंने एक मात्र ग्रंथ बिहारी सतसई की रचना की, जिसमें 713 दोहे संकलित हैं । बिहारी के दोहों की प्रशंसा करते हुए आलोचकों ने उनके विषय में कहा है - "बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है । " उनके विषय में प्रायः यह उक्ति कही जाती है-

" सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर

देखन में छोटन लगे बेधै सकल शरीर ।"

बिहारी के काव्य में भाव पक्ष एवं कला पक्ष दोनों का संतुलित समन्वय देखने को मिलता है । बिहारी मूलतः श्रृंगार रस के कवि हैं । उन्होंने श्रृंगार के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों का वर्णन किया है । संयोग वर्णन में उन्होंने नायिका के अंग -प्रत्यंग के सौंदर्य का सरस चित्रण तो किया ही है ,साथ ही साथ नायक -नायिका की प्रेम क्रीड़ाओं, हाव-भाव का भी विशद वर्णन किया है -

" बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय

सौंह करै भौंहनु हँसे देन कहै नटि जाय ।"

बिहारी के इशारों इशारों वाली यह दोहा भी काफी प्रसिद्ध है जहां नायक नायिका भरी सभा में नैनन से ही सात बातें कर लेते हैं और किसी को कुछ पता तक नहीं चलता है-

" कहत, नटत, रीक्षत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात ।

भरे भौन में करत हैं, नैननु हीं सों बात ।।"

बिहारी ने वियोग वर्णन में भी सुंदर चित्र अंकित किया है । बिहारी का विरह वर्णन कहीं-कहीं अतिशयता की हद को पार कर गया है -

"औंधाई सीसी सुलखि विरह वरनि बिललात ।

बिच ही सूखि गुलाबु गौ छींटौ हुई न गात ।।"

विरह की इसी अतिशयता के कारण आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने यह टिप्पणी की है-" बिहारी का विरह वर्णन मजाक की हद तक पहुंच गया है ।" किंतु जहां यह विरह की अतिशयता संतुलित रूप में आती है तो सुंदर सा चित्र अंकित होता है-

" कहा कहौं बाकी दसा हरि प्रानन के ईस ।

विरह ज्वाल जरिबौ लखैं मरिबो भयौ असीस ।।"

यूँ तो बिहारी के काव्य में श्रृंगार चित्रण सर्वश्रेष्ठ रूप में है किंतु श्रृंगार के साथ-साथ प्रकृति वर्णन , कल्पना की अतिशयता, चमत्कार दर्शन आदि का भी सुंदर रूप देखने को मिलता है ।भाषा की समास शक्ति भी अद्भुत है । कम शब्दों में अधिक से अधिक भाव व्यक्त करना , बड़े से बड़े प्रसंगों को दो ही पंक्तियों में समाविष्ट कर देने की कला बिहारी में खास है ।

अतः उपर्युक्त उल्लेखों के आधार पर कहा जा सकता है कि बिहारी उच्च कोटि के कवि हैं । यद्यपि उनमें श्रृंगार रस की प्रधानता है किंतु भक्ति एवं नीति का समावेश भी कविता में किया गया है । ऐसे कई विशेषताओं के कारण ही बिहारीलाल रीतिकाल के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं ।

आवश्यक निर्देश - विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि पाठ्य पुस्तक में दिए गए अंश का ध्यान पूर्वक अध्ययन करें और प्रस्तुत अभ्यास के प्रश्नों का तर्क आधारित उत्तर देने का प्रयास करें । विद्यार्थियों/ परीक्षार्थियों के मार्गदर्शन हेतु यह ई-कंटेन्ट संक्षिप्त रूप में तैयार किया गया है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी

नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय